ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 340-341

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

मालवीय जी की शिक्षा विषयक दृष्टि एवं उनके शैक्षिक अवदान

प्रमोद कुमार चौरसिया
प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र, राम गिरीश राय पी0 जी0 कालेज दुबौली, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत।

Received- 03.08.2020, Revised- 07.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: - pkch86@gmail.com

सारांश : *पं0 मदन मोहन मालवीय बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। इनका जन्म इलाहाबाद के एक गौंड ब्राह्मण परिवार में 25 दिसम्बर,1861 को हुआ था। मूल रूप से यह परिवार मालवा निवासी था और इलाहाबाद में मल्लई परिवार के नाम से प्रसिद्ध था। पं0 मदन मोहन जी आगे चलकर मल्लई के स्थान पर मालवीय कर लिया था। इनके पिता पं० ब्रजनाथ व्यास बड़े धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे और कथा–वार्ता से जीवन निर्वाह करते थे। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न न होने के बाद भी ये दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते थे। महान देश भक्त, शिक्षविंद, समाज सुधारक, तेजस्वी व्यक्तित्व, मानवीय मूल्यों के प्रबल समर्थक, मर्यादित, आचरण से ओत–प्रोत, ऋषितुल्य, राष्ट्रीयता के सजक प्रहरी, उदार सनातनी, विधिवेता, मूर्धन्य पत्रकार, भारतीय संस्कृति के उन्नायक, प्रौद्योगिकी व वैज्ञानिक शिक्षा के पोषक, मृदुभाषी, प्रखर वक्ता, दीन–दुखियों के कल्पवृक्ष, करुणा एवं दया की मूर्ति, गाँधी जी के पूज्य एवं प्रातः स्मरणीय महामना मदन मोहन मालवीय एक युग पुरुष थे। मालवीय जी छुआछूत, दीनता, दरिद्रता की दासता को मानवता के लिए अभिशाप मानते थे कि काशी को "सर्वविद्या की राजधानी" बनाकर भारतीय संस्कृति को आधुनिक प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक शिक्षा से सम्पन्न करना चाहते थे ताकि वह अपना स्थान पा सके तथा उन्होंने इस हेतु काशी विश्वविद्यालय की स्थापना का संकल्प लिया तथा इसके निम्न उद्देश्यों को निर्धारित किये ।*

कुंजीभूत शब्द– बहुमुखी प्रतिभा, परिवार, धर्मनिष्ठ, कथा–वार्ता, जीवन–निर्वाह, आर्थिक दृष्टि, प्रबल समर्थक, मर्यादित।

1. सामान्यतः विश्वमात्र के और विशेषतः हिन्दुओं के हितार्थ प्राचीन भारतीय सभ्यता में वह सब कुछ जो अच्छा और महान है, उसके तथा हिन्दुओं के सर्वोत्ष्ट विचार और संस्कृति के संरक्षण एवं लोक में प्रसार हेतु सामान्यतः संस्कृत वाङ्मय तथा हिन्दू शास्त्रों के अध्ययन को प्रोत्साहन।
2. सामान्यतः कला और विज्ञान शाखाओं के अध्ययन और अनुसन्धान को प्रोत्साहन।
3. देश भौतिक संसाधनों के विकास एवं स्वदेशी उद्योग प्रोत्साहित करने में सहायक के रूप में उत्कृष्ट तथा आकलित ऐसे वैज्ञानिक, तकनीकी व्यावसायिक ज्ञान को आवश्यक व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ अग्रसर करना।
4. धर्म एवं आचरण को शिक्षा का अभिन्न अंग बना कर युवजनों के चरित्र निर्माण को प्रोत्साहित करना।

महामना के घोषित उद्देश्य प्राच्य और पाश्चात्य ज्ञान के समाहार की उनकी चेतना को को स्पष्ट करते है तथा देश के सर्वांगीण विकास एवं देश की पारम्परिक निजता की रक्षा के लिए उनकी चिन्ता व्यक्त करते हैं। काशी विश्वविद्यालय में विशुद्ध पारम्परिक शास्त्रों का पारम्परिक पद्धति से अनुशीलन, पश्चिम के विज्ञान तकनीकी एवं व्यावसायिक ज्ञान एवं प्रशिक्षण के साथ युवा छात्रों को सबल चारित्रिक पीठिका प्रदान करने की उनकी आकांक्षा उनके शिक्षा–दर्शन का आधार है। शिक्षा को देश की व्यावसायिक आकांशा एवं आवश्यकता के साथ संयुक्त कर महामना ने देश की स्वतंत्रता के संघर्ष के दिनों में एक सर्वांगीण शिक्षा दर्शन और उसको क्रियान्वित करने का "मॉडल" दिया।

स्वतंत्रता के संघर्ष में राष्ट्रीय आंदोलन को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के योगदान एवम स्वातन्त्रयोत्तर युग में देश के औद्योगिक एवं वैज्ञानिक तकनीकी शिक्षा तंत्र को खड़ा करने हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की भूमिका ने महामना की दूरदृष्टि को असंदिग्ध रूप से सही प्रमाणित किया है।

महामना ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की परिकल्पना करते समय देश और विदेश में रहे शिक्षा विषयक चिन्तन का गम्भीर अध्ययन किया था। महामना ने शिक्षा के प्रसार में हिन्दुओं की अपेक्षित भूमिका पर बल दिया और आशा की कि हिन्दू समुदाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के कार्य में आगे बढ़ कर भाग लेगा। हिन्दुओं का यह आवाहन वस्तुतः उस युग के शैक्षिक क्रान्ति में नये विज्ञान और तकनीकी ज्ञान को समाहृत करने के साथ–साथ कला और विज्ञान के अनुशीलन एवं अनुसंधान को पारम्परिक भारतीय ज्ञान के साथ समंजस करने की आकांक्षा का द्योतक था। देश की शैक्षिक आवश्यकता को पूरा करने में केवल विदेश शासन पर अवलम्बित होने के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

विचार से महामना सहमत नहीं थे। इसलिए शिक्षा के प्रसार में निजी प्रयत्न की भूमिका पर उनहोंने अतीत बल दिया। उन्होंने देश एवं विदेश में इस प्रकार के शासनेत्तर निजी–स्वतंत्र प्रयत्न के उदाहरण दियेय भारतवर्ष भर के समृद्ध वर्ग ही नहीं, सामान्य जनता के स्वैच्छिक विचार दान से एक महान विश्वविद्यालय को आकर दिया। शिक्षा में निजी (प्राईवेट) भागीदारी का यह सिद्धान्त किसी भी प्रकार के शिक्षा के व्यावसायीकरण का विचार नहीं था। वस्तुतः एक सहज एवं सुलभ शिक्षा–व्यवसाय के लिए मानवीय निजी उदार प्रयत्न का उद्‌बोधित करना ही इनका लक्ष्य था ताकि शासकीय विदेशी हस्तक्षेप मुक्त एवं आदर्श स्वदेशी शिक्षा तंत्र की आदर्श उपस्थिति हो सके काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में यह जीवन्त 'मॉडल' हमारे सामने है।

उच्च शिक्षा एवं शोध के बारे में महामना का . ष्टिकोण आज के समय में और भी प्रासंगिक हो गया है। हर क्षेत्र में शिक्षा तो उनका संकल्प था लेकिन उनकी हमेशा यही परिकल्पना थी कि दुनिया में उनके विश्वविद्यालय के छात्र अग्रणी भूमिका में हो उनका मानना था कि महज विद्यालय भवन बना देने से ही यह सम्भव नहीं है। हर क्षेत्र में उत्‍ष्ट विद्धान ही उनके सपनों को साकार कर सकते हैं। इसलिए महामना ने देश–विदेश के विद्धानों से सम्पर्क कायम किया और अनेकानेक महान विभूतियों को अध्यापनार्थ लाये। उन्होंने इस दुनिया में एक अनोखे शिक्षा के रूप में प्रतिष्ठित किया उन्होंने गोपाल .ष्ण गोखले के अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा बिल (1911) को भरपूर समर्थन करते हुए उसे नया आयाम प्रदान किया।

मालवीय जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में यही कार्य किया। महामना ने काशी में आधुनिक शिक्षा केन्द्र स्थापना कर, राष्ट्र निर्माण और मानवता की सच्ची सेवा की उनके द्वारा स्थापित परम्पराओं और सिद्धांतों का पालन करना तथा उनसे प्रेरणा लेकर हमें आगे बढ़ना है। मानव धर्म के पुरोधा महामना के मन–वाणी कर्म में दो प्राचीन आदेश समाहित है जिसे वे प्रायः उद्‌घृत करते थे– 'आत्मनःप्रतिकूलानि परेषा न समाचरते।' अर्थात दूसरों के प्रति कोई भी ऐसा आचरण न करो जिसे तुम अपने प्रति किये जाने पर अप्रिय समझते हो। तथा यादात्मनि चेच्छेत तत्परस्यापि चिन्तयेत अर्थात जो कुछ तुम अपने प्रति चाहते हो, वैसा ही दूसरों के प्रति भी करना आवश्यक है, ऐसा समझना चाहिए कि मालवीय जी के विचार से विद्यालयों शिक्षा का उद्देश्य बालक शारीरिक एवं मानसिक विकास करते हुए उसे सदाचारी बनाना और उसकी आध्यात्मिक उन्नत का ध्यान रखना है।

मालवीय जी कट्टर सनातन धर्मी थे। वे वर्णाश्रम धर्म में विश्वास करते थे किन्तु वे अन्य मतालम्बियों से घृणा नहीं करते है मालवीय जी हिन्दू संस्‍ति की सुरक्षा के लिए बड़े प्रयत्नशील थे। किन्तु 'हिन्दू' शव्द का अर्थ उनके लिए संकुचित नहीं था। उन्होंने शिक्षा शास्त्र के सिद्धान्तों की विवेचना विधिवत नहीं की। किन्तु काशी हिन्दू विश्वविद्यालयों के संस्थापक होकर उन्होंने व्यावहारिक शिक्षाशास्त्री होने का संसार को परिचय दिया है। उनकी निःस्वार्थ सेवा भावना ,उनकी त्याग वृत्ति और दीन – दुखियों के प्रति उनकी सहानुभूति वन्दनीय थी। उन्होंने करोड़ों रूपये एकत्र किये किन्तु स्वयं सदा निर्धन ही बने रहे। वे भारत के अभिमानी पुरुष थे। और भारत को उन पर अभिमान था। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शव्दों में –

भारत को अभिमान तुम्हारा, तुम भारत के अभिमानी।
पूज्य पुरोहित थे हम सबके, रहे सदैव समाधानी।।
तुम्हे कुशल याचक कहते है, किन्तु कौन तुम से दानी ?
अक्षय शिक्षा–सत्र तुम्हारा, हे, 'ब्राह्मण ब्रह्मज्ञानी।।

अतः यह कहा जा सकता है कि मदन मोहन मालवीय तत्कालीन भारत के धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षिक सभी क्षेत्र में भाग लिया। नेतृत्व सम्भाला और डूबते हुए भारत को बचाने में बहुत बड़ा योगदान दिया। इन्होने जीवन भर हिन्दी, हिन्दू और हिंदुस्तान के उत्थान के लिए संघर्ष किया। वे आदर्शों के आदर्श थे, शिक्षा के क्षेत्र में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक एवं संचालन के रूप में जाने पहचाने जाते है और सच बात यह है कि इनकी भारत को सबसे बड़ी देन है। सर तेजबहादुर सरूप ने ठीक ही कहा है कि यदि उन्होंने इस विश्वविद्यालय की नींव रखने तथा उसे आज की स्थिति में पहुंचने के अतिरिक्त और कुछ न भी किया तो भी भारत के इतिहास में उनका नाम अमर होगा। इन्होने उस समय भारतीय धर्म–दर्शन में आस्था रखते हुए भी पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा की शुरुआत की थी। यह उस शुरुआत का ही परिणाम है कि देश में इंजीनियरिंग और तकनीकी शिक्षा का विकास हुआ और हम अपना आर्थिक विकास कर सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिपाठी, कमलेश दत्त, 2001, संकलित पुस्तक : शिक्षा का उत्तर आधुनिक परि.ष्य एवं महामना मालवीय जी की शिक्षा दृष्टि (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी) पृ० सं० 47 –49.
2. पाण्डेय, रामशकल, 2005 संकलित पुस्तक : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृष्टि भूमि (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा) पृ० सं० 241–253.

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*